शासकीय विद्यालयों से मोह कम क्यों...?

शासकीय प्राथमिक, माध्यमिक, हाई स्कूल व हाई सेकेंडरी विद्यालयों में निरंतर विद्यार्थियों की संख्या कम हो रही हैं। ड्रॉप आउट यानी बीच में ही पढ़ाई छोड़ने वालों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है प्राथमिक,माध्यमिक,हाई स्कूल, व हायर सेकेंडरी कई बच्चे बीच में से ही पढ़ाई छोड़ देते हैं शैक्षणिक गुणवत्ता और शैक्षणिक गतिविधियों में निरंतर सुधार शासन,विभाग अपने स्तर पर कर रही है। विद्यालयों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने का भी प्रयास किया जा रहा है, फिर भी अधिकांश लोगों का रुझान अशासकीय विद्यालयों की तरफ अत्यधिक हो रहा है। इसके कई कारण हो सकते हैं। कई शासकीय विद्यालय प्रदेश में बंद होने की कगार पर आ रहे हैं। विद्यालय बंद होने के कई कारण हो सकते हैं जहां तक केसर का अनुमान है कि विद्यालय की शैक्षणिक गुणवत्ता के साथ-साथ शिक्षकों को अध्यापन कार्य के अतिरिक्त अन्य कार्यों में लगाया जाना भी हो सकता हैं। जिसके कारण शिक्षक नियमित रूप से विद्यालय में अध्यापन कार्य नहीं कर पा रहा है।

नंबर दो सिर्फ विद्यालय के भवन क्षतिग्रस्त संसाधन, सुविधाओं का अभाव रहता है जो आधुनिक युग और समय के हिसाब से उनको अपडेट नहीं किया जा रहा है। तीन नंबर शासन का पाठ्यक्रम निरंतर परिवर्तन होता जा रहा जो शिक्षकों को प्रतिवर्ष प्रशिक्षण देना पड़ता है इस पर पैसा बहाया जाता, निरंतर पाठ्यक्रम में परिवर्तन शिक्षकों में असामानजस्यता भी रहती है। चौथा शासन हर स्तर पर प्रयास करती है कि निरंतर स्कूलों में संख्या बड़े इसके लिए शासन के निर्देशानुसार अनुपस्थित रहने वाले बच्चे से निरंतर संपर्क शिक्षकों द्वारा किया जाता हैं साथ ही प्रवेश उत्सव के माध्यम से शत प्रतिशत प्रवेश के लिए शासकीय स्कूल के जो शिक्षक हैं वह सब प्रतिशत प्रवेश के लिए घर-घर संपर्क कर जो निर्धारित कक्षा पहली से 12वीं तक के विद्यार्थियों को प्रवेश दिलाया जाता है नंबर पांच परीक्षा पद्धति में भी प्रतिवर्ष परिवर्तन होता है। शिक्षा प्रोत्साहन हेतु शासन भी लैपटॉप, स्कूटी,विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्तियां,मध्यान भोजन,गणवेश के साथ-साथ अन्य शिक्षण सामग्री भी विद्यालयों को प्रधान की जाती है किंतु इसके बाद भी कई लोगों का मोह शासकीय स्कूलों को छोड़कर निजी स्कूलों की ओर अग्रसर हो रहा है। शासकीय विद्यालय में विषय विशेषज्ञ, अनुभवी,गुणवत्तापूर्ण अच्छी गुणवत्ता वाले प्रशिक्षित शिक्षकों के पश्चात भी लोग अपने बच्चों को पढ़ाने हेतु खूब पैसा खर्च करके भी अशासकीय स्कूलों में पढ़ते हैं। किंतु निशुल्क शिक्षा जो सरकारी स्कूल में दी जाती संसाधन पुस्तक को शासकीय सुविधाओं के पश्चात भी लोगों का आकर्षण शासकीय स्कूलों के प्रति अच्छा नहीं है यह एक विचारणीय प्रश्न है शासन प्रशासन के लिए भी के लिए भी विचारणीय प्रश्न है कि आखिर शासकीय विद्यालयों की ओर ग्रामीण और शहरी बच्चे पालक अपने बच्चों को क्यों नहीं पढाते हैं? शासन को भी ऐसी स्थिति को देखते हुए शिक्षा का केंद्रीकरण करना पड़ रहा है सीएम राइज(सांदीपनि स्कूल) स्कूल, पीएम श्री, मॉडल स्कूल, उत्कृष्ट स्कूल, इस प्रकार विभिन्न नाम से कई शासकीय विद्यालयों संचालित हो रहे है। नतीजा शासन को बस तक चलना पड़ रही है जिस पर करोड़ों रुपए खर्च शासन कर रही है।

देश-प्रदेश की सरकारों को इस और विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। क्योंकि किसी भी देश की उन्नति, प्रगति, समृद्धि और विकसित राष्ट्र बनाने के लिए उस देश की जनता का उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा से शिक्षित होना अनिवार्य होता है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्र हो या शहरी क्षेत्र शिक्षा सभी के लिए शिक्षा का होना अत्यंत महत्वपूर्ण होती है जीवन यापन करने के लिए आत्मनिर्भर होने के लिए औद्योगिक यूनिवर्सिटी के लिए उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा का होना अंतिम आवश्यक है लेकिन ऐसा देखने समझने में आता है कि निरंतर शिक्षा की गुणवत्ता दिनों दिन घाटी जा रही है देश प्रदेश में कई ऐसे स्कूल विद्यालय है जो स्कूलों को व्यावसायिक रूप से चला रहे हैं। जहां शिक्षा सक्षम लोगों बेची जा रही हैं। गरीब और वंचित वर्ग अपने बच्चों को वहां तक नहीं पहुंचा पता है इसलिए वह निरंतर अपने उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा से वंचित ही रह जाता है अर्थात ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिभावान बच्चे कई बार अच्छा अवसरो से वंचित होकर मात्र साक्षर बनकर रह जाते हैं। क्योंकि इसका फायदा शहरी क्षेत्र के धनवान परिवार के लोग उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा खरीद कर अपने बच्चों को सेटल कर लेते हैं यह प्रवृत्ति आमजन में ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष कर देखी जाती है। शासन को चाहिए कि ग्रामीण क्षेत्र या शहरी क्षेत्र के समस्त शासकीय विद्यालय को अपडेट कर करें। उनमें नियमित शिक्षकों को नियुक्त करें साथ ही क्षतिग्रस्त भवनों की मरम्मत या नवीन भवन बनाए। आधुनिक तकनीक और युग से बच्चों को शिक्षकों को पढ़ाया जाए । संसाधन पर्याप्त उपलब्ध कराया जाए ।इसके अतिरिक्त अन्य किसी भी प्रकार का कोई भी कार्यक्रम विद्यालय में आयोजित नहीं हो। शिक्षकों से शिक्षण कार्य के अलावा कोई कार्य नहीं करवाया जाना चाहिए । शिक्षकों से भी अपनी गुणवत्ता बनाने, बेहतर कार्य करवाने के अतिरिक्त कोई कार्य नहीं करवाया जाए। कई बार देखने में आता है कि शिक्षकों को निर्वाचन जनगणना के अतिरिक्त राष्ट्रीय कार्यों के अतिरिक्त कई ऐसे कार्य होते हैं जहां पर शिक्षकों को जाना होता है सबसे अहम और बड़ी बात यह है शासन को शिक्षा का केंद्रीय कारण करने की अपेक्षा विकेंद्रीकरण किया जाना चाहिए शासन प्रशासन को इस और विषय ध्यान दिया जाना चाहिए राज्य सरकार व केंद्र सरकार को चाहिए कि शिक्षा का बजट बढ़ाया जाना चाहिए देश की शिक्षा प्रणाली को किस प्रकार अंतरराष्ट्रीय स्तर की गुणवत्ता वाली बनाया जाना चाहिए और कम से कम एक शिक्षा नीति पद्धति को 10 से 15 वर्ष चलना चाहिए इसी प्रकार महत्वपूर्ण और मुद्दे की बात यहां है कि देश प्रदेश में सभी जगह सभी ग्रामीण शहरी क्षेत्र में आंगनवाड़ी भवन व आंगनवाडी कार्यकर्ता, सहायिका के रूप में संचालित हो रही है यदि इन्हें प्राथमिक विद्यालयों से जोड़कर उन बच्चों को नामांकन कर दिया जाए और विद्यालयों के साथ ही उन्हें संचालित किया जाए तो शासकीय विद्यालयों में प्रवेश संख्या बड़ा सकती हैं । क्योंकि शासन का खर्च काफी बच सकता है क्योंकि आंगनवाड़ी कार्यकर्ता,सहायिका को मानदेय,बच्चों मध्यान भोजन भवन पूर्व से ही दिया जा रहा है मात्र केवल उन्हें विद्यालयों से चल -1ह्यह्ह,चल-2ठ्ठस्र व नर्सरी कक्षाएं संचालित करने के करने का आदेश मात्रा देना है। नई शिक्षा नीति 2020 को पूर्ण रूप से लागू किया जा सकता है क्योंकि पहली कक्षा में 6+ आयु अनिवार्य की गई है और इस आयु के बच्चे सरकारी स्कूल के लिए शेष बचते नहीं। क्योंकि शासकीय स्कूलों में नर्सरी कक्षाएं नहीं होने से निशुल्क शिक्षा आरटीई अंतर्गत बच्चे अशासकीय स्कूलों में प्रवेश ले चुके होते है।

इन आरटीई अंतर्गत पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए शासन निजी विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों के लिए उनकी फीस प्रतिपूर्ति शासन करती है जिसके लिए शासन करोड़ों रुपए निजी विद्यालयों को देते हैं इसी प्रकार शासन कई स्तरों पर रेवाड़ी संस्कृति मुफ्त की योजनाओं में करोड़ों अरबो रुपए खर्च करती है। यदि वह सारा पैसा धन शिक्षा गुणवत्ता पर खर्च किया जाए और उसका विकेंद्रीकरण कर दिया जाए शिक्षक स्तर उच्च गुणवत्ता वाला बनाया जाए। शिक्षकों को सुविधा, अधिकार पर्याप्त वेतन दिया जाए और विभिन्न प्रकार के संसाधनों से सुसज्जित कर

कर दिया जाए तो निश्चित ही देश की उन्नति और प्रगति में शहरी क्षेत्र के साथ ग्रामीण क्षेत्र की प्रतिमाएं देश उन्नति और प्रगति अपने अपना विशेष योगदान प्रदान कर सकती है लेकिन अभी हमारे शासन प्रशासन का ध्यान इस शिक्षा की और न के बराबर दिया जा रहा है केवल राजनीतिकरण वोट बैंक की राजनीति तुष्टिकरण की राजनीति और रेवाड़ी संस्कृति की योजनाओं पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। शासन प्रशासन से अपेक्षा करता हूं कि इस और भी शासन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि रेवाड़ी संस्कृति पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगाकर योजनाओं को बंद कर देश के ग्रामीण क्षेत्र की प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने हेतु देश की उन्नत के ऊपर में अपना योगदान देने हेतु उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए रोजगारोन्मुखी शिक्षा का होना अति आवश्यक होता है। यदि ग्रामीण या शहरी क्षेत्र हो उन्हें उनके क्षेत्र में उनके मोहल्ले में उनके गांव में यदि शिक्षा सरल व सुलभ और आसानी हो सकती है । अधिकांश निजी विद्यालय, महाविद्यालय,विश्विद्यालय राजनीति संरक्षण प्राप्त होकर विद्यालय व्यवसायिक रूप में संचालित हो रहे हैं हम विश्व की आर्थिक विकसित राष्ट्र में सम्मिलित होने की और अग्रसर रहे और हमारा ग्रामीण क्षेत्र गरीब,वंचित वर्ग शिक्षा में पीछे रहा है निजी स्कूलों में शिक्षा खरीदना पड़ रही है जबकि वहीं शिक्षा फ्री निशुल्क में शासकीय विद्यालय में सुलभ आसान और सरल तरीके से मिल रही हैं। जहां उनके माता-पिता आसानी से आ -जा सके, मिल-जुल सके।इसके लिए ग्रामीण क्षेत्र के स्कूलों को समृद्ध और सुसज्जित कर पूर्ण रूप से उन्हें अधिकार के साथ संचालित करें शासन से अपेक्षा है कि शिक्षा गुणवत्ता को अंतरराष्ट्रीय स्तर

की बनाने हेतु देश को उन्नति और प्रगति समृद्धि और विकास हेतु विकसित राष्ट्र बनाने में के लिए देश की गुणवत्ता सुधारने के लिए शिक्षा का श्रेष्ठ होना अत्यंत आवश्यक है शिक्षा भी वह जो जन-जन तक अंतिम व्यक्ति तक पहुंच पाए वहीं उत्तम शिक्षा है यदि शिक्षा का केंद्रीय कारण की अपेक्षा विकेंद्रीकरण कर दिया जाए शासन करोड़ों रुपए जो फ्री की योजनाओं पर खर्च कर रही है यह अन्य ऐसी अनावश्यक योजनाओं पर खर्च कर रही है वह सारा धन यदि शिक्षा पर खर्च किया जाए ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय को पूर्ण रूप से अपडेट कर विकसित कर शिक्षकों की भर्ती का सतत मॉनिटरिंग करने को पश्चात संसाधन में शिक्षक की गुणवत्ता में सुधार करवाया जाए।लेखक के निजी विचार हैं।

कल्याण सिंह राजपूत केसर

संविधान के निर्माता की जयंती पर आम्बेडकर को याद कर माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित

महिदपुर। जवाहर डोसी पीयूष। संविधान निर्माता डॉ.भीमराव आंबेडकर की जयंती स्थानीय आम्बेडकर चौक प्रतिमा स्थल पर ब्लाक कांग्रेस कमेटी एवं शहर कांग्रेस कमेटी द्वारा क्षेत्रीय विधायक दिनेश जैन बोस के मुख्य आतिथ्य में मनाई गई कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला पंचायत प्रतिनिधि जितेन्द्र मंडोरा ने की।

उक्त जानकारी पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष अरुण बुरड़ ने देते हुए बताया कि कार्यक्रम के प्रारम्भ में बाबा साहेब की प्रतिमा पर कांग्रेसजनों ने माल्यार्पण किया।पूर्व ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष अनिल आंचलिया ने अपने उदबोधन में संविधान निर्माता डॉ.भीमराव आम्बेडकर एवं भारतीय संविधान के बारे में अपने विचार व्यक्त करते कहा कि भाजपा संविधान में परिवर्तन करना चाहती है।हमारे नेता राहुल गांधी व जीतू पटवारी,महेश परमार व दिनेश जैन बोस इसको लेकर सड़क तक लड़ाई लड़ रहे हैं। आपने सभी से एकजुट होकर बाबा साहेब के बताए मार्गों पर चलने का आव्हान किया।उपस्थित कांग्रेसजनों ने भी अपने विचार रखे।इस अवसर पर ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष कैलाश बगाना, शहर कांग्रेस अध्यक्ष सगीर बेग, पूर्व ब्लाक अध्यक्ष हीरालाल आंजना, बाबूलाल थावलिया, पार्षदगण रईस कुरेशी, बाबा नागोरी, गिरधारीलाल चौहान, मुजाहिद नागोरी, विक्रमसिंह पटेल महुडी, दिनेश बघेल, जुगल पांचाल, राहुल सोलंकी, राधेश्याम गोलवी, आत्माराम रोहिड़ा, राहुल मालवीय, श्यामलाल राठौर बैजनाथ, शैलेंद्र जोशी, बलवंत राठौर, बाबूलाल मकवाना, मुकेश राठौर, राधेश्याम राठौर, कनीराम वर्षी सेवाराम रोहिड़ा, प्रकाश राठौर, श्रवण परमार, दीपक राठौर, मदनलाल डाबिया, राजाराम परमार, आशाराम गेहलोत, विनोद वर्षी, राहुल बामनिया, दीपक बामनिया, पर्वतलाल परमार, बालाराम भाटिया, राकेश परमार, कमल परमार, दीपक गुजराती, भोलाराम परमार, तेजाराम परमार आदि कांग्रेसजन उपस्थित थे।अन्त में आभार राधेश्याम गोलवी ने माना।

संघर्ष ले सफलता तक : जिज्ञासा नेताम के कला यात्रा...!

छत्तीसगढ़ के उभरत कलाकार जिज्ञासा नेताम आज अपन मेहनत, लगन अउ निरंतर अभ्यास के बल म एक अलग पहचान बना ले हें। सेजस शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जगदलपुर, जिला बस्तर ले पढ़े जिज्ञासा बचपन ले ही कला के प्रति गहरी रुचि रखथें।

जिज्ञासा बतायें कि जब वो छोटी रहिन, त वो हर चीज ला खुद से बनाय के कोशिश करत रहिन। चित्र चाहे जइसन बनय, लेकिन सीखय के जिद कभू कम नई होइस। धीरे-धीरे ये अभ्यास ओखर कला ला निखार देइस।

ओखर जीवन म पहिली बड़ी सफलता तब मिलीस जब वो सिरफि 8 साल के रहिन। Tribal Culture Event Raipuह म ओखर एक पेंटिंग चयनित होइस अउ वो तृतीय स्थान हासिल करिन। ये उपलब्धि के बाद परिवार के भरोसा बढ़िस अउ ओमन जिज्ञासा ला सपोर्ट करे लगिन।

साल 2024 म आयोजित Yatayat Sadak Suraksha Drawing Competition म जिज्ञासा द्वितीय स्थान हासिल करिन। एखर बाद वो अलग-अलग जगह म हिस्सा लेवत रहिन अउ कई प्रतियोगिता म प्रथम स्थान हासिल करके अपन प्रतिभा के लोहा मनवाइन।

जिज्ञासा के पेंटिंग के खासियत ये हावे कि वो अपन कला म गोंड़ जनजाति के संस्कृति ल बहुत सुंदर ढंग ले उकेरथें। ओखर चित्र म गोंड़ समाज के पारंपरिक पहिनावा, जीवन शैली अउ खास करके गोदना कला (टैटू परंपरा) के जीवंत झलक दिखाई देथे। ए सब्बो चीज ओखर कला ला अलग पहचान देथे अउ सांस्कृतिक रूप ले समृद्ध बनाथे।

साल 2026 म आयोजित Dalpat Sagar Deep Mahotsav के ड्रॉइंग प्रतियोगिता म जिज्ञासा प्रथम स्थान हासिल करके एक बेर फेर अपन कला के जादू बिखेर दीन।

अभी जिज्ञासा ड्रॉइंग क्लासेस जावत हें ताकि वो Indira Kala Sangeet Vishwavidyalaya (खैरागढ़) म चयनित हो सकें अउ अपन सपना ला साकार कर सकें।

धमतरी जिला के पोटियाडीह गाँव के स्थानीय छत्तीसगढ़ी साहित्यकार गणेश्वर पटेल ह कविता के माध्यम से कुछ अइसन लिखथे-

रंग म बसगे सपना
रंग-रेखा म जिनगी गढ़े,
छोटे सपना ला आकार दे।
बचपन ले जे सुरू होइस,
मेहनत ले ऊंचाई दे।
गोंड़ संस्कृति के झलक दिखे,
पहिरावा म परंपरा बोहाय।
गोदना कला के हर रेखा,
अपन माटी के गाथा गुनगुनाय।
जिज्ञासा के उड़े अब पंख,
कला संग सपना सच हो जाय।

- गणेश्वर पटेल, ग्राम पोटियाडीह, जिला धमतरी (छ.ग.)

वर्षीतप की आराधना के उपलक्ष्य में चौबीसी का आयोजन, भक्ति व तप की अद्भूत छटा

आष्टा। नगर में जैन समाज के आध्यात्मिक वातावरण के बीच वर्षीतप जैसी कठिन तपस्या के उपलक्ष्य में चौबीसी कार्यक्रमों का सिलसिला निरंतर जारी है। भगवान आदिनाथ से लेकर महावीर स्वामी तक की असीम कृपा एवं वाणी के जादूगर, वात्सल्य सम्राट परम पूज्य आचार्य जीतरब सागर सूरीश्वर समंघ तथा साध्वीवर्या कल्पज्योति श्रीजी म.सा. शासन ज्योति श्रीजी म.सा आदि ठाणा-5 के पावन सानिध्य में चौबीसी का यह आयोजन श्रद्धा एवं भक्ति के साथ संपन्न हो रहा है। परम पूज्य साध्वी स्नेह ज्योति श्रीजी के वर्षीतप निमित्त एवं वोहरा परिवार की गौरव श्रीमती स्मिता वोहरा के दूसरे वर्षीतप की पूर्णाहुति के अवसर पर चौबीसी का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर समाजजनों में विशेष उत्साह और धार्मिक उल्लास देखा गया।

क्या है वर्षीतप, क्यों है विशेष- जैन धर्म में वर्षीतप को अत्यंत कठिन और महान तपस्याओं में से एक माना जाता है। यह तप लगभग एक वर्ष से अधिक तक चलने वाली विशेष आराधना है, जिसमें साधक एक दिन उपवास और दूसरे दिन आहार का नियम अपनाते हुए निरंतर संयम, साधना और आत्मचिंतन में लीन रहता है। यह तप केवल शारीरिक त्याग नहीं, बल्कि मन, वचन और कर्म की शुद्धि का साधन है, जिससे आत्मा की उन्नति और कर्मों का क्षय होता है।

एक साथ कई तपस्वियों की पूर्णाहुति, बना विशेष अवसर- इस अवसर पर ०सोने पर सुहागा० जैसी स्थिति तब बनी जब श्रीमती नीलिमा ललित कुमार बनवट, श्री शैलेष रांका, श्रीमती रूचि रांका एवं श्रीमती शीतल पीयूष रांका का भी वर्षीतप पूर्ण होने जा रहा है। सभी तपस्वियों की समाजजनों द्वारा बारम्बार अनुमोदना कर उनके तप की सराहना की गई।

भक्ति-भाव से गूंजी चौबीसी, महिलाओं की रही विशेष भागीदारी- ललित-रेखा वोहरा, अनिल-रानी वोहरा एवं अंकुर-मिलका वोहरा परिवार द्वारा आयोजित इस चौबीसी में बड़ी संख्या में समाज की महिलाओं एवं श्रद्धालुओं ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान 24 तीर्थंकरों की स्तुति स्वरूप भक्ति गीतों एवं भजनों का मधुर गायन किया गया, जिससे पूरा वातावरण धर्ममय हो उठा।

प्रभावना वितरण के साथ हुआ समापन- कार्यक्रम के अंत में वोहरा परिवार द्वारा पधारी हुई सभी महिलाओं को प्रभावना वितरित कर सम्मानित किया गया। उपस्थितजनों ने तपस्वियों के उज्ज्वल भविष्य एवं आत्मकल्याण की कामना करते हुए उनके तप की सराहना की। समाजजनों ने कहा कि वर्षीतप जैसी कठिन साधना आज के समय में त्याग, संयम और आत्मबल का अद्वितीय उदाहरण है, जो सभी के लिए प्रेरणास्रोत है।

साध्वी स्नेह ज्योति श्रीजी सहित तपस्वियों की अनुमोदना, समाजजनों ने दी शुभकामनाएं

मोहन और शमां की लवस्टोरी

मोहन और शमां की लव स्टोरी की शुरुआत तो शुरू हुई 40 के बाद यूं तो दोनों बहुत ही अच्छे पति पत्नी थे। उनके दो बच्चे भी थे घर की सारी जिम्मेदारी बहुत ही अच्छे से दोनों मिलकर संभाल रहे थे । और अब तो बच्चे भी बड़े हो चुके थे। मगर प्यार इस तरफ तो कभी ध्यान ही नहीं गया दोनों पति-पत्नी का। क्यों कि जिम्मेदारियों के बीच उन्हें फुर्सत ही नहीं थी। प्यार मोहब्बत जैसी बातों के लिए उन्हें तो बस जो जिंदगी ने दिया उसे साथ ले आगे बढ़ता चला गया।

जब कभी दोस्तों के बीच प्यार मोहब्बत की बातें होती तो मोहन और शमां बस मुस्कुरा देते ।कभी कुछ बात नहीं करते इस विषय पर ! उनके दोस्त अक्सर कहते हम लोग तुम्हारा उदाहरण देते हैं अपने घर में और तुम लोग इतने अच्छे से एक दूसरे को समझते हो इतने बेहतर तरीके से सब कुछ संभाल रहे हो घर ऑफिस बच्चे फैमिली एंड फ्रेंड्स और तुम दोनों एक दूसरे को प्यार भी बहुत करते हो एक्सेप्ट क्यों नहीं करते माना तुम्हारी शादी तुम्हारी मर्जी के खिलाफ हुआ था। मगर तुम दोनों से अच्छा रिश्ता तुम दोनों के बीच का तालमेल तो मैंने अपनी जिंदगी में अब तक की उम्र में किसी भी पति पत्नी में नहीं देखा।मेरी मानो और एक्सेप्ट कर लो तुम दोनों एक दूसरे के लिए बने हो ,दोनों एक दूसरे के पूरक हो और एक दूसरे से बेइंतहा मोहब्बत भी करते हो।

इतना कहकर शुभम और उसके सारे दोस्त वहां से चले गए रात भी काफी हो चुकी थी। मगर मोहन और शमां अपनी अपनी जगह पर अब भी बैठे एक दूसरे की तरफ देख रहे थे और दोनों एक साथ कह उठे प्यार और जोर का कहकहा लगाया फिर वहां से उठ कर चले गए। छुट्टियां खत्म हो चुकी थी और बच्चे अपने अपने कालेज लौट गए थे ।घर पर बस मोहन और शमां ही थे। दिन की शुरुआत तो उन्होंने रोज की ही तरह की थी।

मगर आज उनके लहजे में एक अलग ही एहसास था, कुछ तो अलग था शायद ये पहली मोहब्बत का असर था। जो दोनों को एक दूसरे के और पास और पास किए जा रहा था। शायद इससे पहले उन्हें ऐसा एहसास कभी नहीं हुआ। एक दिन चाय पीते वक्त मोहन ने शमां को गुमसुम देख कर उससे पुछा क्या सोच रही हो...?? इससे शमां की तंद्रा भंग हुई और कहा कुछ कहा तुमने मोहन ने मुस्कुराते हुए कहा कहां खोई हो ..?इस पर शमां कहा मैं तुम्हारे बारे में ही सोच रही थी। हंसते हुए मोहन ने कहा लगता है मोहतरमा को मुझ से इश्क हो गया है.....? शमां बोली मुझे भी ऐसा ही कुछ कुछ लगता है।सोचती हूं थोड़ी और जिम्मेदारी निभा लूं!

फिर तुम्हारे साथ आराम से इश्क करूंगी बेफिक्र होकर
क्यों मुझे अपनी गर्लफ्रेंड बनाएगी....??
मोहन शायराना अंदाज में कहता है क्यों नहीं..
नेकी और पूछ-पूछ..... !!

समय पंख लगा कर उड़ने लगा बच्चों की पढ़ाई पूरी होते ही जॉब लग गई। मोहन और शमां ने समय की मांग को देखते हुए अपने बच्चों की शादी ब्याह भी अच्छा घर परिवार देख कर विधि विधान के अनुसार बहुत अच्छे से संपन्न किया।अब बच्चे भी अपनी अपनी जगह सेटल हो चुके थे। फिर एक बार दोनों पति पत्नी बाहर गार्डन में बैठे बातें कर रहे थे। अचानक मोहन ने कहा शमां अब तो तुमने अपनी सारी जिम्मेदारियां निभा ली!

अब मेरे बारे में तुम्हारा क्या ख्यालत है..??बनोगी मेरी गर्लफ्रेंड...!!

किरण काजल बेंगलुरु